Faizane Hafize Millat (HINDI)

फ़ैज़ाने हाफ़िज़े मिल्लत

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने ह़ाफ़िज़े मिल्लत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه" मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात MO. 98987 32611
E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पीरे त़रीक़त, रहबरे शरीअ़त, क़ाइदे क़ौमो मिल्लत, मुक़्तदाए अहले सुन्नत, उस्ताज़ुल उ़-लमा, जला-लतुल इ़ल्म, हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى का नाम अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ और लक़ब ह़ाफ़िज़े मिल्लत है जब कि सिल्सिलए नसब अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन ह़ाफ़िज़ ग़ुलाम नूर बिन मौलाना अ़ब्दुर्रह़ीम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى है ।

---

1 ... فردوس الاخبار، ۱/۴۲۲، حدیث: ۳۱۴۹

विलादते बा सआ़दत

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने 1312 हि. ब मुत़ाबिक़ 1894 ई. क़स्बा भोजपूर (ज़िलअ़ मुरादआबाद, यूपी हिन्द) बरोज़ पीर सुब्ह़ के वक़्त इस आ़लमे रंगो बू में जल्वा फ़रमाया।

दादा हुज़ूर की पेशीन गोई

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दादा मौलाना अ़ब्दुर्रह़ीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने देहली के मश्हूर मुह़द्दिस शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الحَفِيْظ की निस्बत से आप का नाम अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रखा ताकि मेरा येह बच्चा भी आ़लिमे दीन बने।[1]

वालिदे माजिद की ख़्वाहिश

वालिदे माजिद ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ ग़ुलाम नूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الغَفُور की शुरूअ़ से येही तमन्ना थी कि आप एक आ़लिमे दीन की ह़ैसिय्यत से दीने मतीन की ख़िदमत सर अन्जाम दें लिहाज़ा भोजपूर में जब भी कोई बड़े आ़लिम या शैख़ तशरीफ़ लाते तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने साह़िब ज़ादे हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को उन के पास ले जाते और अ़र्ज़ करते हुज़ूर ! मेरे इस बच्चे के लिये दुआ़ फ़रमा दें।[2]

1..... मुख़्तसर सवानेह़े ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 18 ब तग़य्युर, वग़ैरा

2..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 53 मुलख़्ख़सन

ह़ाफ़िज़े मिल्लत के वालिदैन

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के वालिदे माजिद अह़कामे शर-अ़ के पाबन्द, मुत्तबेए़ सुन्नत, बा अ़मल ह़ाफ़िज़ और आ़शिक़े कुरआन थे। उठते बैठते, चलते फिरते कुरआने मजीद की तिलावत ज़बान पर जारी रहती ह़िफ़्ज़े कुरआन इस क़दर मज़बूत़ था कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه "बड़े ह़ाफ़िज़ जी" के लक़ब से मश्हूर थे, बच्चों की उ़म्र सात साल होते ही उन्हें नमाज़ की ताकीद करते और उन का म-दनी ज़ेह्न बनाते। कोई मिलने आता तो ख़ूब मेहमान नवाज़ी किया करते अगर मेहमान नमाज़ का पाबन्द होता तो रात ठहरा लेते वरना सिर्फ़ खाना खिला कर रुख़्सत कर देते, जब ह़ज व ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए और वापसी पर अख़्राजात ख़त्म हो गए तो किसी के आगे हाथ न फैलाया बल्कि मेह़नत मज़दूरी कर के अख़्राजात जम्अ़ किये और 9 माह बा'द तशरीफ़ लाए। तक़रीबन सो साल उ़म्र पा कर इस दारे फ़ानी से आ़लमे जाविदानी की त़रफ़ कूच कर गए।[1]

आप की वालिदए मोह़-त-रमा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا नमाज़ रोज़े की बड़ी पाबन्दी फ़रमातीं। मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही और ईसार का ऐसा जज़्बा अ़त़ा हुवा था कि घर में ग़ुरबत होने के बा वुजूद पड़ोसियों का बहुत ख़याल रखा करतीं, अक्सर अपना खाना एक बेवा पड़ोसन को खिला देतीं और ख़ुद भूकी रह जातीं।[2]

1..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 54 मुलख़्ख़सन
2..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 55 मुलख़्ख़सन

इब्तिदाई ता'लीम और हिफ़्ज़े कुरआन

हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इब्तिदाई ता'लीम नाज़िरा और हिफ़्ज़े कुरआन की तक्मील वालिदे माजिद हाफ़िज़ गुलाम नूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُور से की। इस के इलावा उर्दू की चार जमाअ़तें वतने अ़ज़ीज़ भोजपूर में पढ़ीं, जब कि फ़ारसी की इब्तिदाई कुतुब भोजपूर और पीपल साना (ज़िलअ़ मुरादआबाद) से पढ़ कर घरेलू मसाइल की वज्ह से सिल्सिलए ता'लीम मौक़ूफ़ किया और फिर क़स्बा भोजपूर में ही मद्रसा हिफ़्ज़ुल कुरआन में मुदर्रिस और बड़ी मस्जिद में इमामत के फ़राइज़ सर अन्जाम दिये।[1]

सिल्सिलए ता'लीम रुक जाने पर इज़्हारे जज़्बात

जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का सिल्सिलए ता'लीम रुक गया तो कभी कभार ग़मगीन हो कर वालिदए माजिदा से अ़र्ज़ करते : आप तो दादा हुज़ूर का येह फ़रमान कि "तुम आ़लिम बनोगे" सुनाया करती थीं लेकिन मैं आ़लिम न बन सका। येह सुन कर वालिदा माजिदा की आंखें पुरनम हो जातीं और दुआ़ के लिये हाथ उठा देतीं।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1..... मुख़्तसर सवानेहे हाफ़िज़े मिल्लत, स. 22 मुलख़्ख़सन

2..... हाफ़िज़े मिल्लत नम्बर, स. 238 मुलख़्ख़सन

सिल्सिलए ता'लीम का दोबारा आग़ाज़

कुछ अ़र्से बा'द ह़ालात बदले और वालिदे माजिद ह़ाफ़िज़ ग़ुलाम नूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُور की ख़्वाहिश और दादा हुज़ूर मौलाना अ़ब्दुर्रह़ीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की पेशीन गोई पूरी होने का सामान यूं हुवा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ ख़ैरआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى के शागिर्दे रशीद, त़बीबे ह़ाज़िक़ मौलाना ह़कीम मुह़म्मद शरीफ़ ह़ैदरआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इ़लाज मुआ़-लजा के सिल्सिले में भोजपूर तशरीफ़ लाने लगे और जब भी आते तो हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इक़्तिदा में नमाज़ अदा करते। एक दिन कहने लगे : आप क़ुरआने मजीद तो बहुत उ़म्दा पढ़ते हैं अगर इ़ल्मे त़िब पढ़ना चाहते हैं तो मैं पढ़ा दूंगा, आप ने जवाब दिया : मेरा ज़रीअ़ए मआ़श इमामत और तदरीस ही है और रोज़ाना मुरादआबाद आना जाना मेरी इस्तित़ाअ़त से बाहर है, ह़कीम साह़िब ने कहा : आप ट्रेन से मुरादआबाद चले जाया करें और सबक़ पढ़ कर भोजपूर से वापस आ जाया करें अख़्राजात की ज़िम्मेदारी मैं उठाता हूं। वालिद साह़िब ने इस की इजाज़त देते हुए इर्शाद फ़रमाया : रोज़ का आना जाना मुनासिब नहीं लिहाज़ा मुरादआबाद में रह कर ही ता'लीम मुकम्मल करो। यूं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इमामत व तदरीस छोड़ कर मुरादआबाद तशरीफ़ ले गए और कुछ अ़र्सा ह़कीम साह़िब से इ़ल्मे त़िब पढ़ा।[1]

1..... मुख़्तसर सवानेह़े ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 23, 24 मुलख़्ख़सन

जामिआ़ नईमिय्या मुरादआबाद में दाख़िला

हकीम साहिब ने आप की ज़हानत और क़ाबिलिय्यत को देखते हुए कहा : मेरी मसरूफ़िय्यात ज़ियादा हैं और आप को पढ़ाने के लिये मुझे मज़ीद मुता-लआ़ करने का वक़्त नहीं मिलता लिहाज़ा अब आप ता'लीम जारी रखने के लिये जामिआ़ में दाख़िला ले लीजिये। चुनान्चे हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने 1339 हि. को तक़रीबन 27 साल की उ़म्र में जामिआ़ नईमिय्या मुरादआबाद में दाख़िला ले लिया और तीन साल तक ता'लीम हासिल की। मगर अब इ़ल्म की प्यास शिद्दत इख़्तियार कर चुकी थी जिसे बुझाने के लिये किसी इ़ल्मी समुन्दर की तलाश थी।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तह़सीले इ़ल्म के लिये उ़म्र की कोई क़ैद नहीं, यक़ीनन इ़ल्मे दीन हासिल करना ख़ुश नसीबों ही का हिस्सा है अगर मुम्किन हो तो दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) में दाख़िला ले कर ख़ुलूसे निय्यत के साथ इ़ल्मे दीन हासिल कीजिये और इस की ख़ूब ख़ूब ब-र-कतें लूटिये। अगर येह न हो सके तो तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये कि येह भी इ़ल्मे दीन हासिल करने और बे शुमार ब-र-कतें पाने का ज़रीआ़ है। आइये ! इ़ल्मे दीन का जज़्बा पैदा करने के लिये एक ह़दीसे पाक सुनिये और हुसूले इ़ल्मे दीन में मश्ग़ूल हो जाइये।

1..... मुख़्तसर सवानेहे हाफ़िज़े मिल्लत, स. 24 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो इ़ल्म ह़ासिल करे और उसे पा भी ले तो उस के लिये दोहरा सवाब है और जो न पा सके उस के लिये एक सवाब है ।[1]

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى दोहरे सवाब की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : एक इ़ल्म त़लब करने, दूसरा पा लेने का क्यूं कि येह दोनों इ़बादतें हैं । और एक सवाब की वज़ाह़त में इर्शाद फ़रमाते हैं : या तो ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी में मर जाए (कि) तक्मील का मौक़अ़ न मिले या उस का ज़ेह्न काम न करे मगर वोह लगा रहे तब भी सवाब पाएगा ।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सदरुश्शरीअ़ह की सोह़बत कैसे मिली ?

1342 हि. में ऑल इन्डिया सुन्नी कॉन्फ़रन्स मुरादआबाद में मुन्अ़क़िद हुई जिस में मश्हूरो मा'रूफ़ और नामवर उ़-लमाए अहले सुन्नत तशरीफ़ लाए जिन में सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى भी शामिल थे । हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मौक़अ़ देख कर सदरुश्शरीअ़ह

---

1 ... مشكاة المصابيح، كتاب العلم، الفصل الثالث ١/٦٨، حديث: ٢٥٣

2..... मिरआतुल मनाजीह़, 1/218

رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में दर-ख़्वास्त की तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : शव्वालुल मुकर्रम से अजमेर शरीफ़ आ जाएं मद्रसा मुईनिय्या में दाख़िला दिलवा कर ता'लीमी सिल्सिला शुरूअ़ करा दूंगा ।[1]

सदरुश्शरीअ़ह की शफ़्क़त

शव्वालुल मुकर्रम 1342 हि. में हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने चन्द हम-अस्बाक़ दोस्तों के साथ अजमेर शरीफ़ पहुंचे उन में इमामुन्नह्व ह़ज़रत अ़ल्लामा ग़ुलाम जीलानी मेरठी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی भी शामिल थे । चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सब को जामिआ़ मुईनिय्या में दाख़िला दिलवा दिया, तमाम दर्सी किताबें दीगर मुदर्रिसीन पर तक़्सीम हो गईं मगर ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अज़ राहे शफ़्क़त अपनी मसरूफ़िय्यात से फ़ारिग़ हो कर **तहज़ीब** और **उसूलुश्शाशी** का दर्स दिया करते । इ़ल्मे मन्तिक़ की किताब ह़म्दुल्लाह तक ता'लीम ह़ासिल करने के बा'द हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मआ़शी परेशानी और ज़ाती मस्रूफ़िय्यत की वज्ह से मज़ीद ता'लीम जारी न रखने का इरादा किया और दौरए ह़दीस शरीफ़ पढ़ने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने शफ़्क़त से फ़रमाया : आस्मान ज़मीन बन सकता है, पहाड़ अपनी जगह से हिल सकता है लेकिन आप की एक किताब भी रह जाए ऐसा

1..... मुख़्तसर सवानेहे़ हाफ़िज़े मिल्लत, स. 24 वग़ैरा

मुम्किन नहीं। चुनान्चे आप ने अपना इरादा मुल्तवी किया और पूरी दिल जम्ई के साथ सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में रह कर मनाज़िले इ़ल्म तै करते रहे बिल आख़िर उस्तादे मोह़तरम क़िब्ला सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की निगाहे फ़ैज़ से 1351 हि. ब मुत़ाबिक़ 1932 ई. में दारुल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ से दौरए ह़दीस मुकम्मल किया और दस्तार बन्दी हुई।[1]

आप के असातिज़ए किराम

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इब्तिदाई ता'लीम अपने वालिदे माजिद ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद ग़ुलाम नूर और मौलाना अ़ब्दुल मजीद भोजपूरी رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰی से ह़ासिल की इस के इ़लावा जामिआ़ नईमिय्या (मुरादआबाद) में ह़ज़रत मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ख़ान फ़त्ह़ पूरी, ह़ज़रत मौलाना अज्मल शाह संभली, ह़ज़रत मौलाना वसी अह़मद सहसरामी और जामिआ़ मुईनिय्या उ़स्मानिय्या (अजमेर शरीफ़) में ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती इम्तियाज़ अह़मद, ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ सय्यिद ह़ामिद हुसैन अजमेरी और ह़ज़रत सदरुश्शरीअ़ह अ़ल्लामा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی जैसे जलीलुल क़द्र असातिज़ा से इक्तिसाबे इ़ल्म किया बिल ख़ुसूस सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की निगाहे फ़ैज़ से आस्माने इ़ल्म के दरख़्शां सितारे बन कर चमके।[2]

1..... ह़ाफ़िज़े मिल्लत नम्बर, स. 232 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

2..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 62, 63 मुल-त-क़त़न

सदरुश्शरीअ़ह के हुक्म की ता'मील

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़ारिगुत्तहसील होने के बा'द कुछ अ़र्से बरेली शरीफ़ (यूपी हिन्द) में हुज़ूर सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में रहे। शव्वालुल मुकर्रम 1352 हि. में ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आप को मुबारक पूर (ज़िलअ़ आ'ज़म गढ़ यूपी) में दर्सो तदरीस का हुक्म दिया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं मुला-ज़मत नहीं करूंगा। सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने मुला-ज़मत का कब कहा है ? मैं तो ख़िदमते दीन के लिये भेज रहा हूं ?[1]

काश ! ख़िदमत सुन्नतों की मैं सदा करता रहूं *अहले सुन्नत का सदा बन के रहूं ख़िदमत गुज़ार*

(वसाइले बख़्शिश, स. 222)

मुबारक पूर में आमद

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه 29 शव्वालुल मुकर्रम 1352 हि. ब मुताबिक़ 14 जनवरी 1934 ई. को मुबारक पूर पहुंचे और मद्रसा अश्रफ़िय्या मिस्बाहुल उ़लूम (वाक़ेअ़ मह़ल्ला पुरानी बस्ती) में तदरीसी ख़िदमात में मसरूफ़ हो गए। अभी चन्द माह ही गुज़रे थे कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के त़र्ज़े तदरीस और इ़ल्मो अ़मल के चरचे आ़म हो गए और तिश्नगाने इ़ल्म का एक सैलाब उमंड आया जिस की वज्ह से मद्रसे में जगह कम पड़ने लगी और एक बड़ी दर्सगाह की ज़रूरत

1..... सवानेहे़ हाफ़िज़े मिल्लत, स. 27 मुल-त-क़त़न

मह़सूस हुई। चुनान्चे आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी जिद्दो जुह्द से 1353 हि. में दुन्याए इस्लाम की एक अ़ज़ीम दर्सगाह (दारुल उ़लूम) की ता'मीर का आग़ाज़ गोला बाज़ार में फ़रमाया जिस का नाम सुल्त़ानुत्तारिकीन ह़ज़रत मख़्दूम सय्यिद अशरफ़ जहांगीर सिमनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی की निस्बत से "दारुल उ़लूम अशरफ़िय्या मिस्बाहुल उ़लूम" रखा गया।[1]

दारुल उ़लूम अशरफ़िय्या से इस्ति'फ़ा और फिर वापसी

हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه शव्वाल 1361 हि. में कुछ मसाइल की बिना पर इस्ति'फ़ा दे कर जामिआ़ अ़-रबिय्या नागपूर तशरीफ़ ले गए, चूंकि आप मालियात की फ़राहमी और ता'लीमी उमूर में बड़ी महारत रखते थे लिहाज़ा आप के दारुल उ़लूम अशरफ़िय्या से चले जाने की बा'द वहां की ता'लीमी और मआ़शी ह़ालत इन्तिहाई ख़स्ता हो गई तो ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हुक्मे ख़ास पर 1362 हि. में नागपूर से इस्ति'फ़ा दे कर दोबारा मुबारक पूर तशरीफ़ ले आए और ता दमे ह़यात दारुल उ़लूम अशरफ़िय्या मुबारक पूर से वाबस्ता रह कर तदरीसी व दीनी ख़िदमात की अन्जाम देही में मश्ग़ूल रहे। ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कोशिशों से मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मुफ़्ती मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के

1..... सवानेहे ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 39 ता 40, वग़ैरा

दस्ते मुबारक से 1392 हि. ब मुताबिक़ 1972 ई. में मुबारक पूर में वसीअ़ क़ित़्अ़ए अर्ज़ पर अल जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या (अ़-रबी यूनीवर्सिटी) का संगे बुन्याद रखा गया।[1]

उस्ताद का अदब

हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हुज़ूर सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में हमेशा दो ज़ानू बैठा करते, अगर सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ज़रूरतन कमरे से बाहर तशरीफ़ ले जाते तो त़-लबा खड़े हो जाते और उन के जाने के बा'द बैठ जाते और जब वापस तशरीफ़ लाते तो अ-दबन दोबारा खड़े होते लेकिन हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस पूरे वक़्फ़े में खड़े ही रहते और ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मस्नदे तदरीस पर तशरीफ़ फ़रमा होने के बा'द ही बैठा करते।[2]

किताबों का अदब

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه क़ियाम गाह पर होते या दर्सगाह में कभी कोई किताब लैट कर या टेक लगा कर न पढ़ते न पढ़ाते बल्कि तक्या या तिपाई (डेस्क) पर रख लेते, क़ियाम गाह से मद्रसे या मद्रसे से क़ियाम गाह कभी कोई किताब ले जानी होती तो दाह्ने हाथ में ले कर सीने से लगा लेते, किसी त़ालिबे इ़ल्म को देखते कि

1..... ह़याते हाफ़िज़े मिल्लत, स. 650 ता 700 मुल-त-क़त़न

2..... ह़याते हाफ़िज़े मिल्लत, स. 70 मुलख़्ख़सन

किताब हाथ में लटका कर चल लहा है तो फ़रमाते : किताब जब सीने से लगाई जाएगी तो सीने में उतरेगी और जब किताब को सीने से दूर रखा जाएगा तो किताब भी सीने से दूर होगी ।[1]

कुरआने पाक का अदब

एक मर्तबा छुट्टी के बा'द कई त़-लबा दारुल उ़लूम अहले सुन्नत अशरफ़िय्या की सीढ़ियों के पास हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ियारत व मुलाक़ात के लिये मुन्तज़िर खड़े थे आप तशरीफ़ लाए तो सब त़-लबा पासे अदब रखते हुए आप के पीछे पीछे चल पड़े । अचानक आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक त़ालिबे इ़ल्म से फ़रमाया : आप आगे आगे चलें । येह सुन कर वोह त़ालिबे इ़ल्म झिजके तो फ़रमाया : आप के पास कुरआन शरीफ़ है इस लिये आगे चलने को कह रहा हूं ।[2]

महफ़ूज़ सदा रखना शहा बे अदबों से और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो

(वसाइले बख़्शिश, स.193)

त़-लबा पर शफ़्क़त

हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इ़ल्मे दीन के त़लब गारों से बे पनाह मह़ब्बत फ़रमाया करते थे, त़-लबा को किसी ग़-लत़ी पर मद्रसे से निकाल देने को सख़्त ना पसन्द करते और फ़रमाते :

1..... ह़याते हाफ़िज़े मिल्लत, स. 66 ब तग़य्युर

2..... ह़याते हाफ़िज़े मिल्लत, स. 66

मद्रसे से त़-लबा का इख़्राज (या'नी निकाल देना) बिल्कुल ऐसा ही है जैसे कोई बाप अपने किसी बेटे को आ़क़ (अ़ला-ह़दा) कर दे या जिस्म के किसी बीमार उ़ज़्व को काट कर अलग कर दे, मज़ीद फ़रमाते : इन्तिज़ामी मसालेह़ (या'नी फ़वाइद) के पेशे नज़र अगर्चे येह शरअ़न मुबाह़ है लेकिन मैं इसे भी अब्ग़ज़ मुबाह़ात (या'नी जाइज़ मुआ़-मलात में सख़्त ना पसन्द बातों) से समझता हूं।[1]

वक़्त की पाबन्दी

हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वक़्त के इन्तिहाई पाबन्द और क़द्रदान थे हर काम अपने वक़्त पर किया करते म-सलन मस्जिदे मह़ल्ला में पाबन्दिये वक़्त के साथ बा जमाअ़त नमाज़ अदा फ़रमाते, तदरीस के अवक़ात में अपनी ज़िम्मेदारी को ब हुस्नो ख़ूबी अन्जाम देते, छुट्टी के बा'द क़ियाम गाह पर लौटते और खाना खा कर कुछ देर क़ैलूला (या'नी दो पहर के वक़्त कुछ देर के लिये आराम) ज़रूर फ़रमाते क़ैलूला का वक़्त हमेशा यक्सां रहता चाहे एक वक़्त का मद्रसा हो या दोनों वक़्त का, ज़ोह्र के मुक़र्ररा वक़्त पर बहर ह़ाल उठ जाते और बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने के बा'द अगर दूसरे वक़्त का मद्रसा होता तो मद्रसे तशरीफ़ ले जाते वरना किताबों का मुत़ा-लआ़ फ़रमाते या किसी किताब से दर्स देते या फिर ह़ाजत मन्दों को ता'वीज़ अ़त़ा फ़रमाते, शुरूअ़ शुरूअ़ में अ़स्र की नमाज़ के बा'द सैरो तफ़रीह़ के लिये आबादी से बाहर

1..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 181

तशरीफ़ ले जाते मगर उस वक़्त भी त़-लबा आप के हमराह होते जो इ़ल्मी सुवालात करते और तशफ़्फ़ी भर जवाबात पाते, अगर किसी की इ़यादत के लिये जाना होता तो अक्सर अ़स्र के बा'द ही जाया करते, क़ब्रिस्तान से गुज़रते हुए अक्सर सड़क पर खड़े हो कर क़ब्रों पर फ़ातिहा और ईसाले सवाब करते। मग़रिब की नमाज़ के बा'द खाना खाते और फिर अपने आंगन (सह्न) में चेहल क़दमी फ़रमाते, इ़शा की नमाज़ के बा'द किताबों का मुत़ा-लआ़ करते और साथ साथ मुक़ीम त़-लबा की देखभाल भी करते रहते कि वोह मुत़ा-लए़ में मसरूफ़ हैं या नहीं। उ़मूमन ग्यारह बजे तक सो जाते और तहज्जुद के लिये आख़िरे शब में उठते, तहज्जुद पढ़ने के बा'द भी कुछ देर के लिये सो जाते, रात में चाहे कितनी ही देर जागना पड़ता फ़ज्र कभी क़ज़ा न होती।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि हम अपने वक़्त की क़द्र करें और सुस्ती उड़ा कर दिन भर के कामों का एक जद्वल बनाएं ताकि हर काम वक़्त पर करने के आ़दी बन सकें। इसी ज़िम्न में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : कोशिश कीजिये कि सुब्ह़ उठने के बा'द से ले कर रात सोने तक सारे कामों के अवक़ात मुक़र्रर हों म-सलन इतने बजे तहज्जुद, इ़ल्मी मशाग़िल, मस्जिद में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़, इशराक़, चाश्त, नाश्ता, कस्बे मआ़श, दो पहर का

1..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 79 ता 80 मुलख़्ख़सन

खाना, घरेलू मुआ़-मलात, शाम के मशाग़िल, अच्छी सोह़बत (अगर येह मुयस्सर न हो तो तन्हाई ब दर-जहा बेहतर है), इस्लामी भाइयों से दीनी ज़रूरिय्यात के तह़्त मुलाक़ात वग़ैरा के अवक़ात मु-तअ़य्यन कर लिये जाएं जो इस के आ़दी नहीं हैं उन के लिये हो सकता है शुरूअ़ में कुछ दुश्वारी पेश आए। फिर जब आ़दत बन जाएगी तो इस की ब-र-कतें ख़ुद ही ज़ाहिर हो जाएंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुन्नत से मह़ब्बत

हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की पूरी ज़िन्दगी मुअ़ल्लिमे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते पाक का नमूना थी चुनान्चे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 616 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **नेकी की दा'वत** सफ़ह़ा 213 पर इर्शाद फ़रमाते हैं : ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने हर अ़मल में सुन्नत का बहुत ज़ियादा ख़याल रखते थे। एक बार ह़ज़रत के दाएं पाउं में ज़ख़्म हो गया, एक साह़िब दवा ले कर पहुंचे और कहा : ह़ज़रत ! दवा ह़ाज़िर है। जाड़े (या'नी सर्दियों) का ज़माना था ह़ज़रत मोज़ा पहने हुए थे, आप ने पहले बाएं (या'नी उलटे) पाउं का मोज़ा उतारा, वोह साह़िब बोल पड़े : ह़ज़रत ! ज़ख़्म तो दाह़ने (या'नी सीधे) पाउं में है ! आप ने फ़रमाया : बाएं (या'नी

उलटे) पाउं का पहले उतारना सुन्नत है।

सुन्नत पर अ़मल की ब-रकतें

नेकी की दा'वत के सफ़ह़ा 214 पर एक और वाक़िआ़ नक़्ल करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत की उ़म्र शरीफ़ सत्तर साल से मु-तजाविज़ (ज़ियादा) हो चुकी थी ट्रेन से सफ़र कर रहे थे जिस बर्थ पर तशरीफ़ फ़रमा थे, इत्तिफ़ाक़ से उस पर एक डॉक्टर साह़िब भी बैठे थे, डॉक्टर साह़िब ने सिल्सिलए कलाम शुरूअ़ किया तो आप की जलालते इ़ल्मी से बहुत मु-तअस्सिर हुए और बार बार आप की त़रफ़ ह़ैरत से देखते रहे, दौराने गुफ़्त-गू डॉक्टर साह़िब ने तअ़ज्जुब का इज़्हार करते हुए कहा : मौलाना साह़िब ! मैं आंखों का डॉक्टर हूं, मैं देख रहा हूं कि इस उ़म्र में भी आप की बीनाई में कोई फ़र्क़ नहीं, बल्कि आप की आंखों में बच्चों की आंखों जैसी चमक है, मुझे बताइये कि इस के लिये आख़िर क्या चीज़ इस्ति'माल करते हैं ? फ़रमाया : डॉक्टर साह़िब ! मैं कोई ख़ास दवा वग़ैरा तो इस्ति'माल नहीं करता, हां एक अ़मल है जिसे मैं बिला नाग़ा करता हूं, रात को सोने के वक़्त सुन्नत के मुत़ाबिक़ सुरमा इस्ति'माल करता हूं और मेरा यक़ीन है कि इस अ़मल से बेहतर आंखों के लिये दुन्या की कोई दवा नहीं हो सकती।

ह़ाफ़िज़े मिल्लत की सादगी और ह़या

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़िन्दगी निहायत सादा और पुर

सुकून थी कि जो लिबास ज़ेबे तन फ़रमाते वोह मोटा सूती कपड़े का होता, कुरता कली दार लम्बा होता, पाजामा टख़्नों से ऊपर होता, सरे मुबारक पर टोपी होती जिस पर इमामा हर मौसिम में सजा होता शेरवानी भी ज़ैबे तन फ़रमाया करते, चलते वक़्त हाथ में अ़सा होता । रास्ता चलते तो निगाहें झुका कर चलते और फ़रमाते : मैं लोगों के उ़यूब नहीं देखना चाहता । घर में होते तो भी ह़या को मल्हूज़े ख़ातिर रखते, साहिब ज़ादियां बड़ी हुईं तो घर के मख़्सूस कमरे में ही आराम फ़रमाते, घर में दाख़िल होते वक़्त छड़ी ज़मीन पर ज़ोर से मारते ताकि आवाज़ पैदा हो और घर के लोग ख़बरदार हो जाएं, ग़ैर मह़रम औ़रतों को कभी सामने न आने देते ।[1]

सिर्फ़ सूखी रोटी खा कर पानी पी लिया

अन्दरूने ख़ाना आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सादगी और क़नाअ़त का येह ह़ाल था कि एक बार आप की बड़ी साहिब ज़ादी ने रात के खाने में आप के सामने डलिया में रोटी रखी और बा'द में दाल का पियाला ला कर क़रीब ही रख दिया, रोशनी दूर और कम थी लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه दाल को न देख सके सिर्फ़ सूखी रोटी खा कर पानी पी लिया और फिर खाने के बा'द की दुआ़ पढ़ने लगे, साहिब ज़ादी ने अ़र्ज़ की : अब्बाजान ! आप ने दाल नहीं खाई ? आप ने तअ़ज्जुब से पूछा : अच्छा ! दाल भी है, मैं ने समझा आज सिर्फ़ रोटी ही है ।[2]

1..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 175, 179 वग़ैरा
2..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 79 मुलख़्ख़सन

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! सद हज़ार आफ़रीं ह़ाफ़िज़े मिल्लत जैसी मुबारक हस्तियों पर जिन्हों ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर दुन्यावी आ़रिज़ी लज़्ज़तों को ठुकराया और आराइशो आसाइश को छोड़ कर सादगी व आ़जिज़ी इख़्तियार की । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन पाकीज़ा हस्तियों के सदक़े हमें भी आ'माले सालिह़ा पर इस्तिक़ामत और हर ह़ाल में अपनी रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

हमेशा निगाहों को अपनी झुका कर करूं ख़ाशिआ़ना दुआ़ या इलाही
मैं मिट्टी के सादा से बरतन में खाऊं चटाई का हो बिस्तरा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 85)

ह़दीसे मुबा-रका की अ़-मली तस्वीर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : وَاِنَّ اَحَبَّ الْاَعْمَالِ اِلَى اللہِ اَدْوَمُهَا وَاِنْ قَلَّ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मह़बूब तरीन अ़मल वोह है जो पाबन्दी से हो अगर्चे कम हो ।[1]

हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे मुबा-रका की अ़-मली तस्वीर थे । आप رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बचपन ही से फ़राइज़ व सुनन के पाबन्द थे और जब से बालिग़ हुए नमाज़े तहज्जुद शुरूअ़ फ़रमा दी जिस पर ता ह़यात अ़मल रहा, सलातुल अव्वाबीन व दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ वग़ैरा बिला नाग़ा पढ़ते यहां तक कि

1...بخاری، کتاب الرقاق، باب القصد والمداومة علی العمل، ۴/ ۲۳۷، حدیث: ۶۴۶۴

आख़िरी अय्याम में दूसरों से पढ़वा कर सुनते रहे, रोज़ाना सुब्ह़ सूरए यासीन व सूरए यूसुफ़ की तिलावत का इल्तिज़ाम फ़रमाते जब कि जुमुआ़ के दिन सूरए कह्फ़ की तिलावत मा'मूल में शामिल थी। आप फ़रमाया करते कि अ़मल इतना ही करो जितना बिला नाग़ा कर सको।[1]

किफ़ायत शिआ़री और सख़ावत

ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपनी ज़ात पर ख़र्च करने के बजाए दूसरों पर ख़र्च कर के ख़ुशी मह़सूस करते थे आप की सीरते मुबा-रका का मुत़ा-लआ़ करने से येह ह़दीसे पाक बे इख़्तियार ज़बान पर आ जाती है : لَا یُؤْمِنُ اَحَدُکُمْ حَتّٰی یُحِبَّ لِاَخِیْهِ مَا یُحِبُّ لِنَفْسِهٖ या'नी तुम में से कोई भी (कामिल) ईमान वाला नहीं हो सकता यहां तक कि अपने भाई के लिये भी वोही चीज़ पसन्द करे जो अपने लिये करता है।[2] जिन पर ह़ाफ़िज़े मिल्लत का अब्रे करम बरसा उन का दाएरा बहुत वसीअ़ था, बा'दे विसाल आप की डाक वाली एक पुरानी गठड़ी मिली जिस में मुल्क भर से आए हुए ख़ुत़ूत़ थे। उन में मु-तअ़द्दिद सफ़ेद पोश उ़-लमा और ख़ुद्दामे दीन की ऐसी तह़रीरें और तशक्कुर नामे थे जिन की ह़ाफ़िज़े मिल्लत मदद फ़रमाया करते थे।[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत

1..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 79 मुलख़्ख़सन

2 ... بخاری، کتاب الایمان، باب من الایمان ان یحب ... الخ، ۱/۱۶، حدیث: ۱۳

3..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 189 मुलख़्ख़सन

رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه यक़ीनन एक बा अ़मल आ़लिमे दीन थे मगर यहां येह बात याद रखिये कि अगर किसी आ़लिम के मुस्तह़ब्बात व नवाफ़िल वग़ैरा में ब ज़ाहिर कमी नज़र आए तो इस का येह मत़लब नहीं है कि वोह क़ाबिले ता'ज़ीम और लाइक़े ख़िदमत नहीं । चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن उ़-लमाए किराम की शान बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : क़ुरआने अ़ज़ीम ने इन सब को अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام का वारिस क़रार दिया ह़त्ता कि बे अ़मल या'नी फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी करें मगर दीगर नेक कामों, मुस्तह़ब्बात व नवाफ़िल में सुस्ती करें ऐसे उ़-लमा को भी वारिस क़रार दिया जब कि वोह सह़ीह़ अ़क़ाइद रखते हों और सीधे रास्ते की त़रफ़ बुलाते हों । येह क़ैद इस लिये है कि जो अ़क़ाइद में सह़ीह़ नहीं और दूसरों को ग़लत़ अ़क़ाइद की त़रफ़ बुलाने वाला है वोह ख़ुद गुमराह और दूसरों को गुमराह करने वाला है । ऐसा आदमी नबी عَلَیْهِ السَّلَام का वारिस नहीं शैत़ान का नाइब होता है । लिहाज़ा सिर्फ़ सह़ीह़ अ़क़ाइद वाला और इस की त़रफ़ दूसरों को बुलाने वाला अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام का वारिस है अगर्चे बे अ़मल हो ।[1]

सारे सुन्नी आ़लिमों से तू बना कर रख सदा कर अदब हर एक का, होना न तू इन से जुदा
मुझ को ऐ अ़त्तार सुन्नी आ़लिमों से प्यार है اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ दो जहां में मेरा बेड़ा पार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 646)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1..... शरीअ़तो त़रीक़त, स. 14

ह़ाफ़िज़े मिल्लत की ख़ुसूसी अदाए मह़ब्बत

जब भी ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा और सदरुश्शरीअ़ह ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰی का नाम सुनते तो अपनी गरदन झुका लेते, हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द व दीगर अकाबिरे अहले सुन्नत के तज़्किरे पर अपनी वालिहाना मसर्रत का इज़्हार करते ।[1]

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब बन्दों में से हैं और यक़ीनन **औलियाउल्लाह** से वक़्तन फ़ वक़्तन करामात का सुदूर होता रहता है आइये ! हुसूले ब-र-कत के लिये ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की करामात सुनिये :

बिग़ैर पेट्रोल के गाड़ी चल पड़ी

एक मर्तबा सफ़र से वापसी पर गाड़ी का पेट्रोल ख़त्म हो गया ड्राइवर ने अ़र्ज़ की : अब गाड़ी आगे नहीं जा सकती, येह सुन कर दीगर रु-फ़क़ा परेशान हो गए मगर उस वक़्त भी ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पुर ए'तिमाद अन्दाज़ में फ़रमाया : ले चलो ! गाड़ी चलेगी اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ, येह फ़रमान सुनते ही ड्राइवर ने चाबी घुमाई तो गाड़ी चल पड़ी और ऐसी चली कि रास्ते भर कहीं न रुकी ।[2]

1..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 171 मुलख़्ख़सन

2..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 212 मुलख़्ख़सन

गिरती हुई छत को रोक दिया

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 616 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **नेकी की दा'वत** सफ़ह़ा 213 पर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की एक करामत बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : अल जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या के बानी मबानी ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى बड़े पाए के बुज़ुर्ग थे । सवानेह़ निगारों ने आप की कई करामात बयान की हैं । उन में एक येह भी है, जामेअ़ मस्जिद मुबारक शाह भी पहले मुख़्तसर ही थी और बोसीदा भी हो गई थी, आबादी की वुस्अ़त के लिह़ाज़ से मस्जिद का वसीअ़ होना भी ज़रूरी था, बहर ह़ाल पुरानी मस्जिद शहीद कर के नई बुन्यादें भरी गईं और मस्जिद की तौसीअ़ का काम शुरूअ़ हुवा । मुबारक पूर के मुसल्मानों ने बड़ी दिलचस्पी और लगन के साथ इस ता'मीर में भी ह़िस्सा लिया, ह़ज़रत ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस काम के भी रहनुमा और सर-बराह थे, ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जामेअ़ मस्जिद के लिये पूरी तवज्जोह और मेह़नत से चन्दे की फ़राहमी की, मुबारक पूर में काफ़ी जोशो ख़रोश था, ग़ुरबत के बा वुजूद मुसल्मान अपनी दीनी ह़मिय्यत का पूरा पूरा सुबूत दे रहे थे, मर्दों ने अपनी कमाई और औ़रतों ने अपने ज़ेवरात

वग़ैरा से इमदाद की । छत पड़ने के बा'द हाजी मुहम्मद उ़मर निहायत परेशानी के आ़लम में दौड़े हुए ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास आए और कहा : हाफ़िज़ साहिब ! जामेअ़ मस्जिद की छत नीचे आ रही है अब क्या होगा ! हाजी साहिब येह कहते कहते रो पड़े । ह़ज़रत हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़ौरन उठे वुज़ू किया और हाजी साहिब के साथ घर से बाहर निकले और अपने पड़ोसी ख़ान मुहम्मद साहिब को हमराह लिया, जामेअ़ मस्जिद पहुंच कर بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ते हुए लकड़ी की चन्द बल्लियां लगा दीं (या'नी लम्बे बांस या लकड़ी के थम लगा दिये) । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कि छत न सिर्फ़ बराबर और दुरुस्त हो गई, बल्कि आज देखिये तो येह पता भी न लग सकेगा कि किस ह़िस्से की छत झुक रही थी ।

हाफ़िज़े मिल्लत की दीनी ख़िदमात

हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक बेहतरीन मुदर्रिस, मुसन्निफ़, मुनाज़िर और मुन्तज़िमे आ'ला थे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का सब से अ़ज़ीम कारनामा अल जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या मुबारक पूर (ज़िलअ़ आ'ज़म गढ़ यूपी हिन्द) का क़ियाम है जहां से फ़ारिग़ुत्तह़सील उ़-लमा हिन्द की सर ज़मीन से ले कर एशिया, यूरोप व अमरीका और अफ़्रीक़ा के मुख़्तलिफ़ ममालिक में दीने इस्लाम की सर बुलन्दी और मस्लके आ'ला ह़ज़रत की तरवीजो इशाअ़त में मसरूफ़े अ़मल हैं ।[1]

1..... ह़याते हाफ़िज़े मिल्लत, स. 533 मुलख़्ख़सन

ह़ाफ़िज़े मिल्लत शख़्सिय्यत साज़ थे

आप एक शफ़ीक़ और मेह्रबान बाप की त़रह़ त़-लबा की ज़रूरिय्यात और ता'लीमो तरबियत के साथ साथ उन की शख़्सिय्यत को भी निखारा करते थे चुनान्चे रईसुल क़लम ह़ज़रते अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इर्शाद फ़रमाते हैं : उस्ताद शागिर्द का तअ़ल्लुक़ आ़म त़ौर पर ह़ल्क़ए दर्स तक मह़दूद होता है लेकिन अपने तलामिज़ा के साथ ह़ाफ़िज़े मिल्लत के तअ़ल्लुक़ात का दाएरा इतना वसीअ़ है कि पूरी दर्सगाह इस के एक गोशे में समा जाए, येह इन्ही के क़ल्बो नज़र की बे इन्तिहा वुस्अ़त और इन्ही के जिगर का बे पायां ह़ौसला था कि अपने ह़ल्क़ए दर्स में दाख़िल होने वाले त़ालिबे इ़ल्म की बे शुमार ज़िम्मेदारियां वोह अपने सर लेते थे, त़ालिबे इ़ल्म दर्सगाह में बैठे तो किताब पढ़ाएं, बाहर रहे तो अख़्लाक़ व किरदार की निगरानी करें, मजलिसे ख़ास में शरीक हो तो एक आ़लिमे दीन के मह़ासिन व औसाफ़ से रू शनास फ़रमाएं, बीमार पड़े तो नुक़ूशो ता'वीज़ से उस का इ़लाज करें, तंगदस्ती का शिकार हो जाए तो माली कफ़ालत फ़रमाएं,पढ़ कर फ़ारिग़ हो तो मुला-ज़मत दिलवाएं और मुला-ज़मत के दौरान कोई मुश्किल पेश आए तो उस की भी उ़क़्दा कुशाई फ़रमाएं, त़ालिबे इ़ल्म की निजी ज़िन्दगी, शादी बियाह, दुख सुख से ले कर ख़ानदान तक के मसाइल ह़ल करने में तवज्जोह फ़रमाएं, त़ालिबे इ़ल्म ज़ेरे दर्स रहे या फ़ारिग़ हो कर चला जाए एक बाप की त़रह़ हर ह़ाल में सर-परस्त

और कफ़ील, येही है वोह जौहरे मुन्फ़रिद जिस ने ह़ाफ़िज़े मिल्लत को अपने अक़्रान व मुआ़सिरीन के दरमियान एक मे'मारे ज़िन्दगी की ह़ैसिय्यत से मुमताज़ और नुमायां कर दिया है ।[1]

आप की तसानीफ़

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तह़रीर व तस्नीफ़ में भी कामिल महारत रखते थे आप ने मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर कुतुब तह़रीर फ़रमाईं जिन में से चन्द के नाम येह हैं : (1) मआ़रिफ़े ह़दीस (अह़ादीसे करीमा का तरजमा और इस की आ़लिमाना तशरीह़ात का मज्मूआ़) (2) इर्शादुल क़ुरआन (3) अल इर्शाद (हिन्द की सियासत पर एक मुस्तिक़ल रिसाला) (4) अल मिस्बाहुल जदीद (बद मज़हबों के अ़क़ाइद से मु-तअ़ल्लिक़ 30 सुवालों के जवाबात ब ह़वाला कुतुब, येह रिसाला मक-त-बतुल मदीना से "ह़क़्क़ो बात़िल में फ़र्क़" के नाम से शाएअ़ हो चुका है ।) (5) अल अ़ज़ाबुश्शदीद (अल मिस्बाहुल जदीद के जवाब "मक़ामिउ़ल ह़दीद" का जवाब) (6) इम्बाउल ग़ैब (इ़ल्मे ग़ैब के उ़न्वान पर एक अछूता रिसाला) (7) फ़िर्क़ए नाजिया (एक इस्तिफ़्ता का जवाब) (8) फ़तावा अ़ज़ीज़िया (इब्तिदाअन दारुल उ़लूम अशरफ़िय्या के दारुल इफ़्ता से पूछे गए सुवालात के जवाबात का मज्मूआ़, ग़ैर मत़्बूआ़) (9) ह़ाशिया शर्हे मिरक़ात ।[2]

1..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 307, ब तग़य्युर

2..... सवानहे ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 73 मुलख़्ख़सन

आप के तलामिज़ा

मुल्क और बैरूने मुल्क हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के तलामिज़ा की ता'दाद पांच हज़ार से ज़ाइद ही होगी और इन में ऐसे ऐसे ज़ी इल्म क़ाबिले क़द्र व फ़ख़्र और क़ाइदाना सलाहिय्यत के हामिल अफ़राद हैं जिन पर मज़्हबी, सियासी, समाजी, इल्मी, रूहानी, इस्लाही और तब्लीग़ी दुन्या को फ़ख़्र और नाज़ है। आप के तराशे हुए चन्द अनमोल व नायाब हीरों के अस्माए गिरामी येह हैं : (1) अज़ीज़े मिल्लत हज़रते अल्लामा शाह अब्दुल हफ़ीज़ مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ख़लफ़े अक्बर हाफ़िज़े मिल्लत व मौजूदा सर-बराहे आ'ला अल जामिअतुल अशरफ़िय्या मुबारक पूर (2) क़ाइदे अहले सुन्नत रईसुल क़लम हज़रते अल्लामा अरशदुल क़ादिरी (3) बहरुल उलूम हज़रत मुफ़्ती अब्दलु मन्नान आ'ज़मी (4) ख़तीबुल बराहीन हज़रते अल्लामा सूफ़ी मुहम्मद निज़ामुद्दीन बस्तवी (5) मुस्लेहे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा क़ारी मुस्लिहुद्दीन सिद्दीक़ी क़ादिरी (6) बानिये दारुल उलूम अम्जदिय्या हज़रत अल्लामा मुफ़्ती ज़फ़र अली नो'मानी (7) फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी (8) बद्रे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मुफ़्ती बदरुद्दीन अहमद गोरख पूरी (9) शैख़ुल क़ुरआन हज़रत अल्लामा अब्दुल्लाह ख़ान अज़ीज़ी (10) अशरफ़ुल उ-लमा सय्यिद हामिद अशरफ़ अशरफ़ी मिस्बाही (11) अदीबे अहले सुन्नत मुफ़्ती

मुजीबुल इस्लाम नसीम आ'ज़मी (12) शैख़े आ'ज़म सय्यिद मुह़म्मद इज़्हार अशरफ़ अशरफ़ी किछौछवी (13) नाइबे ह़ाफ़िज़े मिल्लत अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ बल्यावी رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ।[1]

ह़ाफ़िज़े मिल्लत के मल्फ़ूज़ात

1. बिला शुबा ऐसी ता'लीम जिस में तरबियत न हो आज़ादी व ख़ुद-सरी ही की फ़ज़ा हो, बे सूद ही नहीं बल्कि नतीजा भी मुज़िर (नुक़्सान देह) है।
2. मैं ने कभी मुख़ालिफ़ को उस की मुख़ा-लफ़त का जवाब नहीं दिया, बल्कि अपने काम की रफ़्तार और तेज़ कर दी, जिस का नतीजा येह हुवा कि काम मुकम्मल हुवा और मेरे मुख़ालिफ़ीन काम की वज्ह से मेरे मुवाफ़िक़ बन गए।
3. इन्सान को मुसीबत से घबराना नहीं चाहिये, काम्याब वोह है जो मुसीबतें झेल कर काम्याबी ह़ासिल करे मुसीबतों से घबरा कर मक़्सद को छोड़ देना बुज़दिली है।
4. जब से लोगों ने ख़ुदा से डरना छोड़ दिया है, सारी दुन्या से डरने लगे हैं।
5. काम्याब इन्सान की ज़िन्दगी अपनानी चाहिये, मैं ने ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को उन के तमाम मुआ़सिरीन में काम्याब पाया, इस लिये ख़ुद को उन्हीं के सांचे में ढालने की कोशिश की।

1..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 128 ता 130, मुल-त-क़त़न

6. बुज़ुर्गों की मजलिस से बिला वज्ह उठना ख़िलाफ़े अदब है।
7. जिस की नज़र मक़्सद पर होगी उस के अ़मल में इख़्लास होगा और काम्याबी उस के क़दम चूमेगी।
8. जिस्म की कुव्वत के लिये वरज़िश और रूह़ की कुव्वत के लिये तहज्जुद ज़रूरी है।
9. काम के आदमी बनो, काम ही आदमी को मुअ़ज़्ज़ज़ बनाता है।
10. हर ज़िम्मेदार को अपना काम ठोस करना चाहिये, ठोस काम ही पाएदारी की ज़मानत होते हैं।
11. इन्सान को दूसरों की ज़िम्मेदारियों के बजाए अपने काम की फ़िक्र करनी चाहिये।
12 एह़सासे ज़िम्मेदारी सब से क़ीमती सरमाया है।
13. तज़्यीए़ अवक़ात (वक़्त ज़ाएअ़ करना) सब से बड़ी मह़रूमी है।[1]

अज़्वाज व औलाद

हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दो निकाह़ किये पहली ज़ौजा से कोई औलाद ज़िन्दा न रही बल्कि दूसरी ज़ौजा से तीन लड़के और तीन लड़कियां हुईं जिन में से एक लड़के और लड़की का इन्तिक़ाल बचपन में हो गया था।[2]

बैअ़त व ख़िलाफ़त

ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه शैख़ुल मशाइख़ ह़ज़रत

1..... सवानेहे ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 74 ता 76 मुल-त-क़त़न
2..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 56 मुलख़्ख़सन

मौलाना शाह सय्यिद अ़ली हुसैन अश्रफ़ी मियां किछौछवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى के मुरीद और ख़लीफ़ा थे । उस्तादे मोह़तरम सदरुश्शरीअ़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى से भी आप को ख़िलाफ़त व इजाज़त ह़ासिल हुई ।[1]

जा नशीने ह़ाफ़िज़े मिल्लत

ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के जल्सए ता'ज़ियत के इख़्तिताम पर मशाइख़े किराम और उ़-लमाए उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ाफ़िज़े मिल्लत के शहज़ादए अक्बर अ़ज़ीज़े मिल्लत ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुल ह़फ़ीज़ مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى को ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ख़िर्क़ा और हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का जुब्बा व दस्तार पहनाया और ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मस्नद पर बिठा कर इन की जा नशीनी का ए'लान किया ।[2]

ह़ाफ़िज़े मिल्लत का मक़ाम उ़-लमाए किराम की नज़र में

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मेरी ज़िन्दगी में दो ही बा ज़ौक़ पढ़ने वाले मिले एक मौलवी सरदार अह़मद (या'नी मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) और दूसरे ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (या'नी

1..... सवानेहे ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 22 मुलख़्ख़सन

2..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 57 मुलख़्ख़सन

हाफ़िज़े मिल्लत मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)।[1]

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द अ़ल्लामा मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : इस दुन्या से जो लोग चले जाते हैं उन की जगह ख़ाली रहती है ख़ुसूसन मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ जैसे जलीलुल क़द्र आ़लिम, मर्दे मोमिन, मुजाहिद, अ़ज़ीमुल मर्तबत शख़्सिय्यत और वली की जगह पुर होना बहुत मुश्किल है।[2]

अमीने शरीअ़त मुफ़्तिये आ'ज़म कानपूर ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती रफ़ाक़त हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : हाफ़िज़े मिल्लत ने अपनी ज़िन्दगी को मुजाहिद व मु-तह़र्रिक अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नक़्शे क़दम पर चला कर और नुमायां ख़िदमात अन्जाम दे कर मुसल्मानों को मौजूदा दौर में दीनी ख़िदमत का जो उस्लूब अ़त़ा किया है वोह क़ाबिले तह़सीन और क़ाबिले तक़्लीद है।[3]

बीमारी में भी हुक़ूक़ुल्लाह की पासदारी

हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दीने मतीन की ख़िदमत और सुन्निय्यत की आब्यारी के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त न दिन देखा न रात, चुनान्चे मुसल्सल काम और बहुत कम आराम की वज्ह से आप अ़लील (बीमार) हो गए डॉक्टरों ने आराम की सख़्त ताकीद की मगर आप ने दर्सो तदरीस से कनारा न किया।

1..... ह़याते हाफ़िज़े मिल्लत, स. 825
2..... ह़याते हाफ़िज़े मिल्लत, स. 824 बि तग़य्युरिन
3..... ह़याते हाफ़िज़े मिल्लत, स. 826

र-मज़ान शरीफ़ में अपने मकान पर तशरीफ़ ले गए मगर बीमारी के बा वुजूद एक रोज़ा भी तर्क न फ़रमाया, तरावीह़ में ख़त्मे कुरआन फ़रमाया और हर काम अपने वक़्त पर अदा फ़रमाते रहे।[1]

विसाले पुर मलाल

31 मई 1976 ई. तक़रीबन शाम चार बजे देखने वालों को येह उम्मीद हो चली कि अब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जल्द ही सिह़्ह़त याब हो जाएंगे बल्कि रात दस बजे तक भी आप की त़बीअ़त में काफ़ी ह़द तक सुकून और सिह़्ह़त याबी के आसार देखे गए मगर ख़िलाफ़े उम्मीद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه यकुम जुमादल उख़्रा 1394 हि. ब मुत़ाबिक़ 31 मई 1976 ई. रात ग्यारह बज कर पचपन मिनट पर दाइये अजल को लब्बैक कह गए اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ।[2] आप की आख़िरी आराम गाह अल जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या मुबारक पूर के सह़न में "क़दीम दारुल इक़ामह" के मग़रिबी जानिब और "अ़ज़ीज़ुल मसाजिद" के शिमाल में वाक़ेअ़ है हर साल इसी तारीख़े वफ़ात पर आप के उ़र्स का इन्इक़ाद भी होता है।[3]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन मुक़द्दस हस्तियों के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

1..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 805 मुलख़्ख़सन

2..... ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 809 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

3..... सवानेहे ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 58 मुल-त-क़त़न

ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत एक नज़र में

वाक़िआ़त	अ़लाक़ा	हिजरी	ई-सवी
विलादत	भोजपूर	1312 हि.	1894 ई.
तक्मीले हिफ़्ज़ व तदरीसे मद्रसा हिफ़्ज़ुल क़ुरआन	भोजपूर	1334 हि.	1915 ई.
अ़-रबी ता'लीम का आग़ाज़ ब ख़िदमत मौलाना ह़कीम मुह़म्मद शरीफ़ मुरादआबादी	मुरादआबाद	1339 हि.	1921 ई.
हुसूले ता'लीम के लिये जामिआ़ नईमिय्या	मुरादआबाद	1339 हि.	1921 ई.
दारुल उ़लूम मुईनिय्या अजमेर शरीफ़ में ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह से इक्तिसाबे उ़लूम	अजमेर शरीफ़	1342 हि.	1923 ई.
शैख़ुल मशाइख़ ह़ज़रत अश्रफ़ी मियां رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से बैअ़त व इरादत	अजमेर शरीफ़	तक़रीबन 1350 हि.	1931 ई.
दस्तार बन्दी	बरेली शरीफ़	1351 हि.	1932 ई.
तदरीस के लिये मुबारक पूर में तशरीफ़आवरी	मुबारक पूर	1352 हि.	1934 ई.
अल जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या (अ़-रबी यूनीवर्सिटी) का संगे बुन्याद	मुबारक पूर	1392 हि.	1972 ई.
विसाले पुर मलाल	मुबारक पूर	1396 हि.	1976 ई.

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	सुन्नत पर अ़मल की ब-र-कतें	17
विलादते बा सआ़दत	2	ह़ाफ़िज़े मिल्लत की सादगी और ह़या	17
दादा हुज़ूर की पेशीन गोई	2	सिर्फ़ सूखी रोटी खा कर पानी पी लिया	18
वालिदे माजिद की ख़्वाहिश	2	ह़दीसे मुबा-रका की अ़-मली तस्वीर	19
ह़ाफ़िज़े मिल्लत के वालिदैने माजिदैन	3	किफ़ायत शिआ़री और सख़ावत	20
इब्तिदाई ता'लीम और ह़िफ़्ज़े क़ुरआन	4	ह़ाफ़िज़े मिल्लत की ख़ुसूसी अदाए मह़ब्बत	22
सिल्सिलए ता'लीम रुक जाने पर इज़्हारे जज़्बात	4	बिग़ैर पेट्रोल के गाड़ी चल पड़ी	22
सिल्सिलए ता'लीम का दोबारा आग़ाज़	5	गिरती हुई छत को रोक दिया	23
जामिआ़ नईमिय्या मुरादआबाद में दाख़िला	6	ह़ाफ़िज़े मिल्लत की दीनी ख़िदमात	24
सदरुश्शरीअ़ह की सोह़बत कैसे मिली ?	7	ह़ाफ़िज़े मिल्लत शख़्सिय्यत साज़ थे	25
सदरुश्शरीअ़ह की शफ़्क़त	8	आप की तसानीफ़	26
आप के असातिज़ए किराम	9	आप के तलामिज़ा	27
सदरुश्शरीअ़ह के हुक्म की ता'मील	10	ह़ाफ़िज़े मिल्लत के मल्फ़ूज़ात	28
मुबारक पूर में आमद	10	अज़्वाज व औलाद	29
दारुल उ़लूम अश्रफ़िय्या से इस्ति'फ़ा और फिर वापसी	11	बैअ़त व ख़िलाफ़त	29
		जा नशीने ह़ाफ़िज़े मिल्लत	30
उस्ताद का अदब	12	ह़ाफ़िज़े मिल्लत का मक़ाम उ़-लमाए किराम की नज़र में	30
किताबों का अदब	12		
क़ुरआने पाक का अदब	13	बीमारी में भी हुक़ूक़ुल्लाह की पासदारी	31
त़-लबा पर शफ़्क़त	13	विसाले पुर मलाल	32
वक़्त की पाबन्दी	14	ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत एक नज़र में	33
सुन्नत से मह़ब्बत	16	मआख़िज़ो मराजेअ़	35

ماخذ و مراجع

نمبر شمار	کتاب کا نام	مطبوعہ
1	صحیح البخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۹ھ
2	مشکاۃ المصابیح	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۲۱ھ
3	فردوس الاخبار	دار الفکر بیروت، ۱۴۱۸ھ
4	مراۃ المناجیح	ضیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور
5	حیات حافظ ملت	المجمع الاسلامی مبارک پور ہند
6	مختصر سوانح حافظ ملت	المجمع الاسلامی مبارک پور ہند ۱۴۲۸ھ
7	شریعت و طریقت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۲۰۰۳ء
8	نیکی کی دعوت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुम्आरात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आमात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133117

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- अहमदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्री कोलिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- देहली :- मक-त-बतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560
- मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- हैदरआबाद :- मक-त-बतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786